



RG

ईमाम अली

इन्हे अबी तालिब (अ.)

की आखिरी वसीयत

बाप का ख़त
बेटे के नाम

बाप का खत बेटे के नाम

ईमाम अली

HindiDuas.ORG

इन्हें अबी तालिब (अ.)

की आखिरी वसीयत

दीबाचा (प्रस्तावना)

सिफ़्फ़ीन की जंग से वापस आने के बाद, इमाम अली (अ.) ने अपने बेटों में से एक को कुछ नसीहतें फ़रमाई। कुछ इतिहासकारों के अनुसार वह इमाम हसन (अ.) थे, जबकि कुछ का कहना है कि वह मुहम्मद अल-हनफ़िय्या थे।

इमाम अली (अ.) ने यह ख़त वसीयत के तौर पर लिखा। इसमें ज़िंदगी के तक्रीबन हर पहलू पर रहनुमाई की गई है, जो इंसान को कामयाब बनाती है—बहादुर, इंसानियत-पसंद, सखी, नेक और परहेज़गार।

ये नसीहतें एक ऐसे बाप की तरफ़ से हैं जो ज़िंदगी की हक्कीकतों को समझ चुका है, जो बूढ़ा हो चला है, जिसने मुश्किलें और आफ़तें सब्र से झेली हैं, जिसने बेहिसाब ख़्वाहिशों को नापसंद किया और उन पर क़ाबू पाया है, और जो जल्द ही इस दुनिया से रुख़सत होने वाला है—अपने उस बेटे के नाम जो जवान है और दुनिया को बेहतर सोच और बेहतर ज़िंदगी की राह दिखाने की तमन्ना रखता है, जबकि यह मक्सद हासिल करना आसान नहीं।

एक बेटा, जो फ़ानी है और फ़ितरत के मुताबिक़ तमाम फ़ानी इंसानों के रास्ते पर चलने वाला है, बीमारियों में घिरा रहता है, मुसीबतों और आफ़तों से सामना करता है, जुल्म और ज्यादती झेलता है, अक्सर मुनाफ़िक़ी, धोखे और फ़ेरेब से दो-चार होता है, और आग्निकार मौत पर ख़त्म हो जाता है—वह ऐसे शख्स का वारिस है जो शहीद हुआ, अपने दुश्मनों की दुश्मनी का निशाना बना। (क्या ही सच्ची भविष्यवाणी!)

यह ख़त तक्रीबन 1400 साल पहले लिखा गया था, लेकिन आज भी उतना ही लागू और मुनासिब है।

हिजरी 40 के साल, रमज़ान की 19वीं तारीख की सुबह, मस्जिद-ए-कूफ़ा में नमाज़ के दौरान, ख़ारिजी इब्र-ए-मुल्जिम ने ज़हरीली तलवार से इमाम अली (अ.) पर वार किया। आप 21 रमज़ान 40 हिजरी को शहीद हुए और नज़फ़-ए-अशरफ में दफ़न किए गए। आप ख़ाना-ए-काबा में पैदा हुए और ख़ाना-ए-खुदा, मस्जिद-ए-कूफ़ा में शहीद हुए। अल्लाह के शेर, रसूल-ए-खुदा (स.) के बाद सबसे बहादुर और सबसे नरमदिल मुसलमान—आपने अपनी ज़िंदगी अल्लाह और उसके रसूल की इताअत से शुरू की और इस्लाम की ख़िदमत में ख़त्म की।

“और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किए गए हैं, उन्हें मरा हुआ मत कहो; बल्कि वे ज़िंदा हैं, मगर तुम महसूस नहीं करते।” (कुरआन 2:154)

ईमाम अली की आखिरी वसीयत

मेरे प्यारे बेटे,

तुझे यह जान लेना चाहिए कि सेहत की कमज़ोरी, वक्त का गुज़र जाना और मौत की क़रीबी ने मुझे यह एहसास दिलाया है कि मुझे अपनी आने वाली ज़िंदगी (आखिरत) और अपने लोगों के बारे में ज्यादा सोचना चाहिए, उन्हें ज्यादा नसीहत करनी चाहिए और इस दुनिया का सामना करने के लिए उन्हें ज़ेहनी तौर पर बेहतर तैयार करना चाहिए।

मुझे यह महसूस हुआ कि मेरे अपने बेटे और मेरे क़रीबी रिश्तेदार, मेरी ज़िंदगी के तजुर्बात और इल्म से उतना ही फ्रायदा उठाने का हक्क रखते हैं जितना कोई और। ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव, इस दुनिया और आखिरत की हक्कीकतें और सच्चाइयाँ—जो मुझे मालूम हैं—वे सब उन्हें भी जानने का हक्क हैं।

इसी लिए मैंने फ़ैसला किया कि मैं तुझ पर ज्यादा वक्त लगाऊँ और तुझे ज्यादा तैयार करूँ। यह न तो खुदगरजी थी, न घमंड और न ही यूँ ही नसीहत देने का शौक, बल्कि यह खालिस और सच्ची ख्वाहिश थी कि तू दुनिया को वैसे ही देखे जैसे मैंने देखा, ज़िंदगी की सच्चाइयों को वैसे ही समझे जैसे मैंने समझा, और सही वक्त पर, सही जगह पर, सही काम करे। इसी ख्वाहिश ने मुझे यह नसीहतें लिखने पर मजबूर किया। इनमें तुझे सिवाय सच और हक्कीकत के कुछ नहीं मिलेगा।

मेरे प्यारे बेटे! तू मेरे जिस्म और मेरी रुह का हिस्सा है। जब भी मैं तुझे देखता हूँ, मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं खुद को देख रहा हूँ। अगर तुझ पर कोई मुसीबत आती है, तो मुझे लगता है जैसे वह मुझ पर आ पड़ी हो। तेरी मौत मुझे अपनी मौत जैसी महसूस होगी। तेरे मामलात मेरे लिए मेरे अपने मामलात जैसे हैं।

इसी लिए मैंने ये नसीहतें क़लमबंद की हैं। मैं चाहता हूँ कि तू इन्हें संभाल कर रखे, इन पर ग़ौर करे और इन्हें अच्छी तरह महफूज़ रखे। हो सकता है मैं तेरी ज़िंदगी में ज्यादा अरसा रहूँ या न रहूँ, लेकिन मैं चाहता हूँ कि ये नसीहतें हमेशा तेरे साथ रहें।

मेरी पहली और सबसे अहम नसीहत, मेरे बेटे, यह है कि अल्लाह से डरना। उसका फ़रमावरदार बंदा बनना। उसके ख्याल को हमेशा अपने ज़ेहन में ताज़ा रखना। उन उसूलों (इस्लाम) से मज़बूती से जुड़े रहना और उनकी हिफ़ाज़त करना जो तुझे अल्लाह से जोड़ते हैं। क्या कोई और रिश्ता इससे ज्यादा मज़बूत, ज्यादा पायेदार और ज्यादा इज़ज़त वाला हो सकता है?

अच्छी नसीहतों को क्रबूल कर और उनसे अपने ज़ेहन को ताज़गी दे। तक़वा अपनाकर अपनी बेहिसाब ख्वाहिशों को क़ाबू में रख। दीन और अल्लाह पर सज्जे ईमान के ज़रिये अपना किरदार मज़बूत बना। मौत को सामने रखकर अपनी फ़ितरत को झुका, उसे ज़िंदगी की फ़ानियत और उन तमाम चीज़ों की नापायेदारी का एहसास दिला जो उसे प्यारी लगती हैं। उसे यह समझने पर मजबूर कर कि मुसीबतें और मुश्किलें हक्कीक़त हैं, हालात और ज़माने बदलते रहते हैं, और उसे पिछली क़ौमों की ज़िंदगी का मुतालआ करने पर आमादा कर।

उसे उजड़े हुए शहरों, टूटे-फूटे महलों, मिट्टी हुई निशानियों और गुज़री हुई सल्तनतों के खंडहरों को देखने पर राज़ी कर। फिर उन लोगों के आमाल पर ग़ौर कर—जब वे ज़िंदा थे और ताक़त में थे तो उन्होंने क्या किया, क्या हासिल किया, कहाँ से चले और कहाँ, कब और कैसे उनका अंजाम हुआ। आज वे कहाँ हैं, ज़िंदगी से उन्होंने क्या पाया और इंसानियत के लिए उनका क्या योगदान था।

अगर तू इन बातों पर गहराई से सोच-विचार करेगा, तो तुझे यह साफ़ नज़र आएगा कि उन सब लोगों ने एक-दूसरे से और हर उस चीज़ से जुदाई कर ली जिसे वे चाहते और पसंद करते थे, और आज वे तन्हा जगह में अकेले पड़े हैं—और तुझे भी एक दिन ऐसा ही होना है।

अपनी आने वाली ठिकाने (आखिरत) के लिए अच्छी तरह तैयारी कर। इस फ़ानी और जल्दी खत्म हो जाने वाली दुनिया की लज़्ज़तों के बदले हमेशा रहने वाली नेमतों को मत बेचा।

उन बातों पर न बोल जिनका तुझे इलम नहीं। जिन मामलों में तुझे राय देने की ज़रूरत नहीं या जिन पर तू सही फ़ैसला करने की हालत में नहीं है, उन पर अटकलें न लगा और हुक्म न दे। उस रास्ते को छोड़ दे जहाँ गुमराह होने का खतरा हो।

जब जहालत के जंगल में भटकने का डर हो, मंज़िल से नज़र हट जाने और मक्सद तक न पहुँच पाने का अंदेशा हो, तो बेहतर है कि तलाश छोड़ दी जाए बजाय इसके कि अनजाने ख़तरों और अनदेखे जोखिमों का सामना किया जाए।

लोगों को नेकी की नसीहत कर और पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारने की तरफ़ बुला, क्योंकि तू इस क़ाबिल है कि ऐसी नसीहत दे सके। तेरे बोल और तेरे आमाल दुनिया को बुराई से बचने और गुनाहों से दूर रहने का सबक़ सिखाएँ। अपनी पूरी कोशिश कर कि गुनाहों और बुराइयों में ढूबे लोगों से दूर रहे।

जब ज़रूरत पड़े, अल्लाह के दीन की हिफ़ाज़त के लिए खड़ा हो। जब तू अल्लाह के दीन का साथ देने का इरादा करे, तो इस बात से न डर कि लोग तुझ पर हँसेंगे, तुझे मलामत करेंगे या बदनाम करेंगे। बेखौफ़ और बहादुरी से सच और इंसाफ़ का साथ दे। जब तू सच के रास्ते पर चले और उसे क़ायम रखने की

कोशिश करे, तो आने वाली तकलीफों को सब्र से सह और रुकावटों का बहादुरी से सामना कर। जहाँ भी सच और इंसाफ़ मिले, उसी का दामन थामे रख। इस्लामी फ़िक़्र हौं और अक्कीदे को अच्छी तरह समझने की कोशिश कर और दीन के उसूलों का गहरा इल्म हासिल कर।

मुसीबतों, आफ़तों और मुश्किल हालात में सब्र की आदत डाल। सब्र अख्लाक़ और किरदार की सबसे बड़ी खूबियों में से है और यह सबसे बेहतरीन आदत है जिसे इंसान अपना सकता है। अल्लाह पर भरोसा रख और हर मुसीबत में अपने ज़ेहन को उसी की पनाह की तरफ़ मोड़, क्योंकि इस तरह तू खुद को और अपने सारे मामलात को सबसे बेहतरीन अमानतदार और सबसे ताक़तवर निगहबान के हवाले कर देगा।

अल्लाह के सिवा किसी से मदद या हिफाज़त न माँग। अपनी दुआएँ, अर्जियाँ, इल्तिजाएँ और फ़रियादें सिर्फ़ उसी के लिए खास रख, क्योंकि देना, बछ़ना, अता करना, और रोकना, महरूम करना या इनकार करना—यह सब सिर्फ़ उसी के इख्लियार में है। जितनी हो सके उसकी बरकतें माँग और जितनी हो सके उसकी रहनुमाई तलब कर।

मेरी नसीहतों को समझने की कोशिश कर, उन पर गहराई से गौर कर। उन्हें हल्का न समझ और न ही उनसे मुँह मोड़, क्योंकि सबसे बेहतरीन इल्म वही है जो सुनने वाले को फ़ायदा दे। जो इल्म किसी को फ़ायदा न दे, वह बेकार है—न कीमती है और न ही याद रखने के लायक़।

मेरे प्यारे बेटे! जब मुझे एहसास हुआ कि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ और कमज़ोरी आहिस्ता-आहिस्ता मुझ पर ग़ालिब आ रही है, तो मैंने जल्दी की कि तुझे एक शरीफ़, नेक और फ़ायदेमंद ज़िंदगी गुज़ारने के बेहतरीन तरीके बता दूँ। मुझे यह ख़याल पसंद नहीं था कि मौत मुझे उस वक्त आ ले जब मैं तुझे वह सब न बता सकूँ जो मैं बताना चाहता था, या मेरी ज़ेहनी कुब्बतें मेरे जिस्म की ताक़त की तरह कमज़ोर पड़ जाएँ।

मैं यह सब तुझ तक इसलिए पहुँचा रहा हूँ ताकि तेरी बेहिसाब ख़वाहिशें, लालच और बहकावे तुझ पर असर न डालें, या ज़माने और हालात की तब्दीलियाँ तुझे कीचड़ में न घसीट लें, या मैं तुझे एक बिना सिखाए हुए बच्चे की तरह छोड़ जाऊँ। क्योंकि जवान और ताज़ा ज़ेहन कुंवारी ज़मीन की तरह होता है—जो उसमें बोया जाए, वह हरा-भरा होकर खूब फलता-फूलता है।

इसी लिए मैंने शुरू ही मैं भौका ग़नीमत जाना कि तुझे तालीम दूँ और तरबियत करूँ—इससे पहले कि तेरा ज़ेहन सख़्त हो जाए, टेढ़ा पड़ जाए, या तू ज़िंदगी का सामना बिना तैयारी के करने लगे, और इससे पहले कि तू दूसरों के जमा किए हुए इल्म, तजुर्बों और रिवायतों से फ़ायदा उठाए बिना अपने फ़ैसले करने पर मजबूर हो जाए।

ये नसीहतें और मशवरे जो मैं तुझे दे रहा हूँ, तुझे इल्म हासिल करने, तजुर्बे जमा करने और दूसरों से मशवरा माँगने की फ़िक्र से बचा देंगे। अब तू उस तमाम इल्म से आसानी से फ़ायदा उठा सकता है जिसे इंसानों ने बड़ी मेहनत, परेशानी और सब्र से हासिल किया है। वे बातें जो उनसे छुपी हुई थीं और जो सिर्फ़ तजुर्बे, आज़माइशों और तकलीफ़ों के ज़रिये सामने आती थीं, अब इन्हीं नसीहतों के ज़रिये तेरे लिए आसानी से उपलब्ध कर दी गई हैं।

मेरे प्यारे बेटे! हालाँकि मेरी ज़िंदगी की मियाद उन कुछ लोगों जितनी लंबी नहीं रही जो मुझसे पहले दुनिया से जा चुके हैं, फिर भी मैंने बड़ी मेहनत और ध्यान से उनकी ज़िंदगियों का अध्ययन किया। मैंने उनके आमाल को गहराई से देखा, उनके फ़ैसलों और कामों पर ग़ौर किया, उनके बचे हुए निशानों, यादगारों और खंडहरों का मुतालआ किया। मैंने उनकी ज़िंदगियों पर इतना गहराई से सोचा कि मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं इतिहास के शुरुआती दौर से लेकर आज तक उनके साथ जीया और काम करता रहा हूँ, और मैं जान गया हूँ कि किस चीज़ ने उन्हें फ़ायदा पहुँचाया और किस बात ने उन्हें नुक़सान दिया।

अच्छे को बुरे से छाँटकर, मैंने जो इल्म जमा किया है, उसे इन पन्नों में तेरे फ़ायदे के लिए समेट दिया है। इन नसीहतों के ज़रिये मैंने तुझे पाक और ईमानदार ज़िंदगी की क़ीमत समझाने की कोशिश की है और बुरी व गुनाहों भरी ज़िंदगी के खतरों से आगाह किया है। एक मेहरबान, समझदार और प्यार करने वाले बाप की हैसियत से मैंने तेरी ज़िंदगी के हर पहलू की हिफ़ाज़त और रहनुमाई का ख्याल रखा है।

शुरू से ही मैंने इस बात का ध्यान रखा कि तेरा किरदार बुलंद बने और तू उस ज़िंदगी के लिए तैयार हो जिसे तुझे जीना है—ताकि तू एक ऐसा नौजवान बने जिसका किरदार नेक हो, ज़ेहन खुला और ईमानदार हो, और अपने आसपास की चीज़ों का इल्म साफ़ और सही हो। शुरू में मेरी बस यही ख्वाहिश थी कि मैं तुझे मुक़द्दस किताब पूरी तरह सिखाऊँ, उसकी बारीकियों को समझाऊँ, अल्लाह के हुक्मों और मनाहियों का पूरा इल्म ढूँ, और तुझे दूसरों के अध्यूरे इल्म के भरोसे न छोड़ूँ।

लेकिन जब मैं इस काम में कामयाब हो गया, तो मुझे यह डर हुआ कि कहीं मैं तुझे उन मसलों में बिना तालीम और तरबियत के न छोड़ दूँ जिनमें पहले ही बहुत उलझन और विरोधाभास हैं। ये वे मसले हैं जिनकी उलझन को खुदग़रज़ ख्वाहिशों, टेढ़े ज़ेहनों, बुरी ज़िंदगी और गुनाहों भरी सोच ने और बढ़ा दिया है। इसलिए मैंने इन पंक्तियों में शराफ़त, तक़वा, सच और इंसाफ़ के बुनियादी उसूल दर्ज कर दिए हैं।

हो सकता है तुझे ये बातें कुछ सख्त और भारी लगें, लेकिन मेरी ख्वाहिश यह है कि तुझे इस इल्म से लैस कर दूँ, बजाय इसके कि तुझे इस दुनिया का सामना बिना हथियार के करने के लिए छोड़ दूँ—जहाँ हर कदम पर नुक़सान और तबाही का खतरा है।

चूँकि तू एक शरीफ़, नेक और परहेज़गार नौजवान है, मुझे पूरा यक्कीन है कि तुझे इलाही रहनुमाई और मदद मिलेगी। मुझे भरोसा है कि अल्लाह तुझे ज़िंदगी में तेरे मङ्गसद तक पहुँचने में मदद करेगा। मैं चाहता हूँ कि तू अपने आप से वादा करे कि मेरी नसीहतों पर ध्यान से अमल करेगा।

याद रख, मेरे बेटे! मेरी नसीहतों में सबसे बेहतर वे हैं जो तुझे अल्लाह से डरने की सीख देती हैं, तुझे उन फ़ज़ीलों की अदायगी पर टिके रहने को कहती हैं जो अल्लाह ने तुझ पर लाज़िम किए हैं, और तुझे अपने बुजुर्गों—रसूल-ए-खुदा (स.) और इमाम अली (अ.)—और अपने नेक रिश्तेदारों के नक्शे-क़दम पर चलने की हिदायत देती हैं। यक्कीनन वे अपने ख़्यालात और आमाल को बहुत सोच-समझकर तौलते थे। वे कोई बात कहने या कोई काम करने से पहले उस पर गहराई से गौर करते थे। तुझे भी यही तरीक़ा अपनाना चाहिए।

इसी सोच-विचार ने उन्हें ज़िंदगी से वही हासिल करने में मदद दी जो सबसे बेहतर था, और उन्होंने वह सब छोड़ दिया जो उन पर फ़र्ज़ नहीं था या जो बेहतर नहीं था। अगर तेरा ज़ेहन मेरी नसीहतों को मानने से इनकार करे और तू उनकी तरह खुद तजुर्बे करना चाहे, तो तुझे इसकी आज़ादी है—लेकिन सिर्फ़ तब, जब तू मसले का पूरा अध्ययन कर ले और ऐसे फ़ैसलों के लिए ज़रूरी इल्म हासिल कर ले।

तुझे शक़ और अनिश्चितताओं को अपने ज़ेहन में ज़हर की तरह घुलने नहीं देना चाहिए। शक़, बेवजह पसंद-नापसंद और ग़ैर-आक्रिलाना सोच तेरी राय पर असर न डालें। लेकिन याद रख, किसी मसले पर सोचने और फ़ैसला करने से पहले अपने रब से रहनुमाई माँग और उससे सही रास्ता दिखाने की दुआ कर। अपने ख़्यालात में उलझन से बच और अपने ज़ेहन को बे-ईमानी के क़ब्ज़े में न आने दे, क्योंकि पहली चीज़ तुझे ला-इल्मियत की तरफ़ ले जाती है और दूसरी तुझे ग़लतियों और गुनाहों की तरफ़।

जब तू किसी मसले को हल करने के लिए इस तरह तैयार हो जाए और तुझे यक्कीन हो कि तेरा ज़ेहन साफ़ है, सच तक पहुँचने की सच्ची और मज़बूत चाहत है, सही बात कहने और सही काम करने का पक्का इरादा है—तो फिर उन नसीहतों को ध्यान से पढ़ जो मैं तेरे लिए छोड़ रहा हूँ।

अगर तेरा ज़ेहन साफ़ न हो और शक़ से पूरी तरह आज़ाद न हो, तो तू अनिश्चितताओं और ग़लतियों के जंगल में उस ऊँट की तरह भटकता रहेगा जिसे रात में दिखाई नहीं देता। ऐसी हालत में बेहतर यही है कि तलाश छोड़ दी जाए, क्योंकि ऐसी कमज़ोरियों के साथ कोई भी सच तक नहीं पहुँच सकता।

मेरे प्यारे बेटे! मेरी इन बातों को बहुत ध्यान से याद रखना। जो रब मौत का मालिक है, वही ज़िंदगी का भी मालिक है। जो पैदा करता है, वही मिटाता है। और जो मिटाता है, वह दोबारा पैदा करने की ताक़त भी रखता है। जो मुसीबतें भेजता है, वही उनसे बचाने की कुदरत भी रखता है।

याद रख कि यह दुनिया उसी के बनाए हुए क्रानूनों के तहत चल रही है। इसमें अमल और उनके नतीजे, वजह और असर, मुसीबतें और राहतें, दुख और सुख, इनाम और सज्जाएँ—सब शामिल हैं। लेकिन तस्वीर यहीं पूरी नहीं होती। इसमें ऐसी बातें भी हैं जो हमारी समझ से बाहर हैं, जिन्हें हम जानते नहीं और न जान सकते हैं, और जिन्हें पहले से देखा या बताया नहीं जा सकता—जैसे क्रियामत के दिन के इनाम और सज्जाएँ।

ऐसी हालत में अगर तू किसी बात को समझ न पाए, तो उसे रद्द न कर। याद रख कि तेरी नासमझी तेरे इल्म की कमी की वजह से है। याद रख कि जब तू इस दुनिया में आया था, तो तू बिल्कुल अनजान, बेतालीम और बे-इल्म था। फिर धीरे-धीरे तूने इल्म हासिल किया। कई बातें ऐसी थीं जो तुझे हैरान करती थीं और समझ में नहीं आती थीं। बाद में तूने उनमें से कुछ को समझ लिया, और आगे चलकर तेरा इल्म और नज़र और भी बढ़ सकती है।

इसलिए तेरे लिए सबसे बेहतर यही है कि तू उसी से रहनुमाई माँगे जिसने तुझे पैदा किया, जो तुझे पालता-पोसता है, जिसने तुझे संतुलित ज़ेहन और सही सलामत जिस्म दिया है। तेरी दुआएँ सिर्फ़ उसी के लिए हों, तेरी अर्जियाँ उसी से हों, और तुझे डर भी सिर्फ़ उसी का हो।

यह जान ले, मेरे बेटे, कि अल्लाह के बारे में इंसानियत को जितनी मुकम्मल जानकारी हमारे रसूल (स.) ने दी है, उतनी किसी और ने नहीं दी। मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि उनकी तालीमात पर ईमान रख, उन्हें अपना रहनुमा बना और अपनी निजात के लिए उनकी हिदायत क्रबूल कर। यह नसीहत देकर मैंने एक सच्चे और प्यार करने वाले मशीर के तौर पर अपनी पूरी कोशिश कर ली है। मैं तुझे यक़ीन दिलाता हूँ कि चाहे तू अपने भले के लिए कितनी भी बेहतर राह तलाश करे, मेरी बताई हुई राह से बेहतर कोई राह नहीं पाएगा।

याद रख, मेरे बेटे, अगर एक अल्लाह के सिवा कोई और खुदा होता, तो वह भी अपने रसूल और नबी भेजता और वे इंसानों को उस दूसरे खुदा की हुकूमत और जलाल दिखाते, और तू भी उन्हें देखता। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। वह एक ही अल्लाह है जिसे हमें पहचानना और उसकी इबादत करना चाहिए। उसने खुद अपनी पहचान करवाई है। उसकी हुकूमत, ताक़त और जलाल में कोई उसका साझीदार नहीं। वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। कायनात के बनने से पहले भी वही था, और उसकी मौजूदगी की कोई शुरुआत नहीं। जब हर चीज़ ख़त्म हो जाएगी, तब भी वही बाक़ी रहेगा, और उसकी मौजूदगी का कोई अंत नहीं। उसका जलाल और वजूद इतना बुलंद, बे-मिसाल और आला है कि अक़लें उसे पूरी तरह समझ नहीं सकतीं। कोई भी उसे पूरी तरह देख या बयान नहीं कर सकता।

जब तू इन हक्कीकतों को मान ले, तो अल्लाह के हुक्मों के बारे में तेरा रवैया ऐसा होना चाहिए जैसे उस शख्स का हो जो जानता है कि उसके रुतबे, ताक़त और मक्काम की अल्लाह के सामने कोई हैसियत नहीं। जो दुआ और इताअत के ज़रिये उसकी रहमत चाहता है, जो उसके अज़ाब और सज्ञा से डरता है, और जिसे हर हाल में उसकी मदद और हिफ़ाज़त की ज़रूरत है। याद रख, मेरे बेटे, अल्लाह ने तुझे वही करने का हुक्म दिया है जो अच्छा है और भलाई फैलाता है, और उसी से रोका है जो बुरा है और बुरे नतीजे लाता है।

मेरे प्यारे बेटे, इस पैग़ाम के ज़रिये मैंने तुझे इस दुनिया की पूरी हक्कीकत समझाई है—कि यह कितनी बदलने वाली और फ़ानी है, कि इसमें जो कुछ भी है या जो कुछ यह देती है, वह कितना थोड़े समय के लिए है, और यह कितनी तेज़ी से अपना रंग बदलती है। मैंने तुझे आने वाली ज़िंदगी के बारे में भी बताया है—वहाँ की नेमतों, लज्ज़तों और जन्मत में तैयार की गई हमेशा रहने वाली अमन, सुकून और खुशी के बारे में।

मैंने ज़िंदगी के दोनों पहलुओं—मौत से पहले और मौत के बाद—की काफ़ी मिसालें दी हैं, ताकि तू हक्कीकत को समझ सके और उसी इल्म की बुनियाद पर अपनी ज़िंदगी गुज़ारो।

दरअसल जिन लोगों ने ज़िंदगी और दुनिया की हालत को ग़ौर से देखा है, वे अपने दिन ऐसे गुज़ारते हैं जैसे वे मुसाफ़िर हों—जिन्हें एक ऐसे मक्काम को छोड़ना है जो क़हत-ज़दा, ग़ैर-सेहतमंद और नामुनासिब है, और एक ऐसे मुल्क की तरफ जाना है जो ज़रख़ेज़, मुनासिब और हर तरह की आराम व नेमतों से भरपूर है।

वे आने वाली बरकतों और सुकून की उम्मीद में खुशी-खुशी इस सफ़र को अपनाते हैं। रास्ते की तकलीफ़ें, मुश्किलें और ख़तरात, दोस्तों से जुदाई, खाने और आराम की कमी—सब कुछ वे खुशी से बर्दाश्त करते हैं, ताकि सफ़र के आखिरी मुक्काम तक पहुँच सकें—एक खुशगवार जगह तक। वे किसी भी तकलीफ़ से इनकार नहीं करते और न ही सदक्का-खैरात देने और ग़रीबों व ज़रूरतमंदों की मदद करने में कोई कंजूसी करते हैं।

अपने मक्कसद की तरफ उठाया गया हर कदम—चाहे कितना ही थकाने वाला क्यों न हो—उनकी ज़िंदगी का खुशगवार लम्हा होता है। इसके बरअक्स, वे लोग जो सिर्फ़ इसी दुनिया में डूबे रहते हैं और इसकी थोड़े समय की, जल्दी मिटने वाली और बुरी लज्ज़तों में फ़ैसे रहते हैं, उनकी हालत उन मुसाफ़िरों जैसी होती है जो हरियाली और खुशी की जगहों में रह रहे हों और जानते हों कि उन्हें ऐसा सफ़र करना है जिसका अंजाम सख्त, सूखा और बंजर इलाक़ा है।

क्या उनके लिए इस सफर से ज्यादा नफरत और धिन की बात कोई हो सकती है? वे उस जगह को छोड़ने से कितनी नफरत करेंगे जहाँ वे हैं, और उस जगह पर पहुँचने से कितना डरेंगे जिसे वे नापसंद करते हैं और जो उनके लिए डरावनी और खौफनाक है!

मेरे प्यारे बेटे, जहाँ तक दूसरे इंसानों के साथ तेरे बर्ताव का सवाल है, तो अपने “नफ्स” को ही तराजू बना—ताकि अच्छाई और बुराई को तौल सके। दूसरों के साथ वही सुलूक कर जो तू चाहता है कि लोग तेरे साथ करें।

जो बात तू अपने लिए पसंद करता है, वही दूसरों के लिए भी पसंद कर; और जो बात तू अपने लिए नापसंद करता है, उससे दूसरों को भी बचा। किसी पर ज़ुल्म और ज्यादती न कर, क्योंकि तू खुद भी ज़ुल्म सहना पसंद नहीं करता। दूसरों के साथ मेहरबान और हमदर्द बन, जैसे तू चाहता है कि लोग तेरे साथ हों। अगर तू दूसरों में कोई बुरी और नफरत के क़ाबिल आदत देखे, तो खुद में वैसी आदतें पैदा करने से बचे।

अगर तू दूसरों से किसी खास तरह का बर्ताव पाकर खुश होता है, तो वैसा ही बर्ताव तू भी दूसरों के साथ कर। लोगों के बारे में वैसी बातें न कर, जैसी बातें तू नहीं चाहता कि लोग तेरे बारे में करें। जिस बात का तुझे इल्म न हो, उस पर न बोल; और अगर तू किसी के बारे में पूरी जानकारी के साथ बात करे भी, तो बदनामी, इलज़ाम और ताना-ज़नी से बचे—क्योंकि तू खुद भी नहीं चाहता कि तेरे साथ ऐसा हो।

याद रख, मेरे बेटे, घमंड और खुद-पसंदी बेवकूफी की सूरतें हैं। ये आदतें तुझे बड़ा नुकसान पहुँचाएँगी और हमेशा खतरे का सबब बनेंगी। इसलिए संतुलित ज़िंदगी गुज़ार—न घमंडी बन और न ही कमतरी के एहसास में जी। ईमानदारी से रोज़ी कमाने की कोशिश कर, मगर कंजूस बनकर दूसरों के लिए माल जमान करता रह।

और जब रब की तरफ से तुझे किसी काम में कामयाबी की राह दिखे, तो अपनी कामयाबी पर घमंड न कर, बल्कि उसके सामने झुक जा और यह समझ कि तेरी कामयाबी उसकी रहमत से है।

याद रख, मेरे बेटे, तेरे सामने एक लंबा और मुश्किल सफर है—यानी ज़िंदगी। यह सफर सिर्फ़ लंबा ही नहीं, बल्कि थकाने वाला और भारी भी है। इसका रास्ता अक्सर वीरान और उदास इलाक़ों से गुज़रता है, जहाँ तुझे ताज़गी, मदद और सहारे की बहुत ज़रूरत पड़ेगी। क्रियामत के दिन तक पहुँचने के लिए ज़रूरी सामान के बिना तू यह सफर पूरा नहीं कर सकता।

लेकिन यह भी याद रख कि अपने ऊपर ज़रूरत से ज्यादा बोझ न डाल। इतने फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारियाँ न उठा कि उन्हें इज़ज़त के साथ निभा न सके, और न ही ऐसी ऐश-ओ-आराम की ज़िंदगी अपना कि वह तुझे बुरा और गुनाहगार बना दे।

अगर बोझ तेरी ताक्त से ज्यादा होगा, तो सफर तेरे लिए बेहद तकलीफ़देह हो जाएगा। अगर तुझे अपने आसपास ऐसे ग़रीब और ज़रूरतमंद लोग मिलें जो क्रियामत तक तेरा बोझ उठाने को तैयार हों, तो इसे रब की नेमत समझ—उनकी मदद कर और अपना बोझ उन पर डाल दे। यानी अपना माल ग़रीबों और ज़रूरतमंदों में बाँट, अपनी हैसियत के मुताबिक़ दूसरों की मदद कर और इंसानों के साथ नरमी और हमदर्दी बरता।

इस तरह तू क्रियामत के दिन हिसाब देने की भारी ज़िम्मेदारी से खुद को हल्का कर लेगा—कि तूने सेहत, दौलत, ताक्त और ओहदे जैसी नेमतों का कैसे इस्तेमाल किया। फिर तू सफर के आखिर तक हल्का और तरोताज़ा पहुँचेगा और वहाँ के लिए काफ़ी ज़खीरा तेरे पास होगा।

जितने हो सके उतने बोझ उठाने वाले तैयार कर—यानी जितनों की हो सके मदद कर—ताकि ज़रूरत के वक्त वे तुझे न मिलें तो कमी महसूस न हो। याद रख कि जो कुछ तू ख़ैरात और नेक कामों में देता है, वह क़र्ज़ की तरह है जो तुझे लौटाया जाएगा।

इसलिए जब तू दौलतमंद और ताक्तवर हो, तो अपनी दौलत और ताक्त का इस्तेमाल इस तरह कर कि क्रियामत के दिन—जब तू बेबस और ग़रीब होगा—वह सब तुझे वापस मिल जाए। जान ले, मेरे बेटे, कि तेरा रास्ता एक बेहद डरावनी घाटी—मौत या क़ब्र—से होकर गुज़रता है, और यह सफर बहुत कठिन है। इस घाटी में हल्का बोझ रखने वाला आदमी भारी बोझ उठाने वाले से बेहतर होता है, और जो तेज़ चल सके वह जल्दी पार कर जाता है। तुझे इस घाटी से हर हाल में गुज़रना है।

इसका आखिरी अंजाम या तो जन्मत है या जहन्म। इसलिए अक्लमंदी यही है कि तू अपना सामान पहले ही वहाँ भेज दे—यानी अपने नेक आमाल—ताकि वे तुझसे पहले पहुँच जाएँ। वहाँ ठहरने का इंतज़ाम पहले ही कर ले, क्योंकि मौत के बाद न तौबा का मौक़ा होता है और न दुनिया में लौटकर ग़लतियाँ सुधारने का।

यह हक्कीकत समझ ले, मेरे बेटे, कि जिस रब के पास जन्मत और ज़मीन के ख़ज़ाने हैं, उसी ने तुझे उनसे माँगने की इजाज़त दी है और दुआ क़बूल करने का वादा किया है। उसने तुझे अपनी नेमतों माँगने और अपनी रहमतें चाहने का हुक्म दिया है। उसने तेरी दुआओं को रोकने के लिए कोई पहरेदार नहीं रखे, और न ही किसी सिफ़ारिश की ज़रूरत है।

अगर तू अपने वादों से फिर जाए, क़सम तोड़ दे, या उन कामों की तरफ़ लौट जाए जिनसे तूने तौबा की थी, तो वह फ़ौरन सज़ा नहीं देता। अगर तू दोबारा तौबा करे, तो वह न ताना देता है और न धोखा—

बल्कि तौबा क्रबूल करता है और माफ़ कर देता है। वह अपनी मग़फिरत में कंजूसी नहीं करता, बल्कि तौबा को नेक अमल क्रार देता है।

मेहरबान रब ने यह फ़ैसला किया है कि हर बुरा अमल एक गिना जाएगा और हर नेक काम का सवाब दस गुना मिलेगा। तौबा का दरवाज़ा खुला है। जब भी तू उसे पुकारे, वह सुनता है; जब भी तू दुआ करे, वह क्रबूल करता है। अपने दिल की ख्वाहिशें उससे माँग, अपने दिल के राज उससे कह, अपनी मुसीबतें और परेशानियाँ उसके सामने रख, और उनसे निकलने के लिए उसकी मदद चाह।

तू उससे लंबी उम्र और अच्छी सेहत माँग सकता है, तरक्की और खुशहाली की दुआ कर सकता है, और ऐसी नेमतें चाह सकता है जो उसके सिवा कोई नहीं दे सकता।

सोच कि उसने सिर्फ़ दुआ करने की इजाज़त देकर अपने ख़ज़ानों की चाबियाँ तेरे हाथ में दे दी हैं। जब भी ज़रूरत हो, उससे माँग—वह देगा। कभी-कभी दुआ देर से क्रबूल होती है; इससे मायूस न हो, क्योंकि कभी रब चाहता है कि तू सब करे और ज्यादा सवाब पाए। कभी-कभी वह तुझे तेरी माँग से भी बेहतर अता करता है।

कभी दुआ क्रबूल न होना भी तेरे फ़ायदे में होता है, क्योंकि तू अनजाने में ऐसी चीज़ माँग लेता है जो तेरे लिए नुक़सानदेह होती है। ऐसी हालत में इनकार छुपी हुई नेमत बन जाता है।

इसलिए अल्लाह से माँगते वक्त बहुत सोच-समझ कर माँग। वही माँग जो तेरे लिए सच में फ़ायदेमंद, टिकाऊ और बे-नुक़सान हो। याद रख, मेरे प्यारे बेटे, दौलत और ताक़त ऐसी चीज़ें हैं जो हमेशा साथ नहीं रहतीं और आखिरत में नुक़सान भी पहुँचा सकती हैं।

जान ले, मेरे बेटे, कि तू इस दुनिया के लिए नहीं बल्कि आखिरत के लिए पैदा किया गया है। तू मरने के लिए पैदा हुआ है, हमेशा जीने के लिए नहीं। इस दुनिया में तेरा ठहराव थोड़े समय का है। तू ऐसी जगह रहता है जो ज़वाल और तबाही के क़ाबिल है। यह वह जगह है जहाँ तुझे आखिरत की तैयारी में लगा रहना चाहिए। यह एक रास्ता है (आखिरत की तरफ़) जिस पर तू खड़ा है।

मौत तेरे पीछे-पीछे चल रही है। तू उससे भाग नहीं सकता। चाहे तू उससे बचने की कितनी ही कोशिश करे, वह देर-सवेर तुझे पकड़ ही लेगी।

इसलिए ख़याल रख कि मौत तुझे अचानक न आ दबोचे, उस वक्त जब तू उसके लिए तैयार न हो और न तुझे गुनाहों से तौबा करने का मौक़ा मिले और न की हुई बुराइयों को सुधारने की गुंजाइश बचे। अगर मौत तुझे बेख़बरी में आ ले, तो तू हमेशा के लिए नुक़सान में पड़ जाएगा। इसलिए, मेरे प्यारे बेटे, हमेशा

तीन बातों को याद रखः मौत, अपने आमाल और आखिरत की ज़िंदगी। इस तरह तू हर वक्त मौत का सामना करने के लिए तैयार रहेगा और वह तुझे अचानक नहीं पकड़ेगी।

मेरे बेटे, दुनिया परस्त लोगों की बुरी ज़िंदगी और उसकी लज्जतों के धोखे में न आना, और इस दुनिया को पाने की उनकी शदीद दौड़ देखकर मुतास्सिर न होना। अल्लाह ने बहुत रहमत के साथ तुझे इस दुनिया की हक्कीकत समझा दी है। सिर्फ़ रब ही नहीं, बल्कि खुद दुनिया ने भी तुझे बता दिया है कि वह फ़ानी है; उसने अपनी कमज़ोरी, अपने ऐब और अपनी बुराइयाँ खुलकर ज़ाहिर कर दी हैं।

याद रख कि ये दुनिया परस्त लोग भौंकते कुत्तों और भूखे, दर्िद्रे जानवरों जैसे हैं। उनमें से कुछ हमेशा दूसरों पर भौंकते रहते हैं। ताक़तवर सरदार ग़रीबों और कमज़ोरों को क़त्ल और तबाह कर देते हैं।

उनके ताक़तवर लोग बेबस लोगों का इस्तिस्मार करते हैं और उन पर ज़ुल्म ढाते हैं। उनकी बे-क़ाबू ख़्वाहिशें और लालच उन्हें इस तरह ज़क़ड़े हुए हैं कि तू उनमें से कुछ को ऐसे पाएगा जैसे जानवर—पैरों और गर्दन में रस्सी बँधी हुई। (उन्होंने सोचने की आज़ादी खो दी है और अपनी आदतों और ख़्वाहिशों की गुलामी से बाहर नहीं निकल सकते।)

और कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें दौलत और ताक़त ने पागल बना दिया है। वे बेक़ाबू दर्िद्रों की तरह बर्ताव करते हैं—दूसरों को कुचलते, मारते और अपने आसपास की हर चीज़ को तबाह करते हैं। दुनिया की तारीख ऐसी ही बड़ी-छोटी घटनाओं से भरी पड़ी है; फ़र्क़ सिर्फ़ ताक़त का है, ज़ुल्म की शिद्दत वही रहती है।

इन लोगों का ज़ेहनी संतुलन बिगड़ चुका है। वे नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं और कहाँ जा रहे हैं। अगर तू उनके कामों और सोच को देखेगा, तो उन्हें उलझा हुआ और गैर-अक़लमंद पाएगा। वे ऐसे लगते हैं जैसे वीराने में भटकते जानवर—न पीने को पानी, न खाने को चारा, न कोई रखवाला और न कोई निगहबान। हक्कीकत यह है कि बुरी दुनिया ने उन्हें अपने क़ब्ज़े में ले लिया है; वह उन्हें जहाँ चाहती है घसीटती है और उन्हें अंधों की तरह इस्तेमाल करती है, क्योंकि उसने उन्हें सच्चे दीन की रौशनी से अंधा कर दिया है।

वे इस दुनिया के बनाए हुए धोखेबाज़ तमाशे में बिना किसी सही मक्कसद और समझदार इरादे के भटक रहे हैं। वे अपने चारों तरफ़ जमा की गई लज्जतों में पूरी तरह डूबे हुए हैं। वे इस दुनिया को ही अपना ख़ुदा और पालने वाला समझ बैठे हैं। दुनिया उन्हें बहला रही है और वे उसी में मस्त होकर सब कुछ भूल चुके हैं।

लेकिन ऐश और लज्जतों की रातें किसी के लिए हमेशा नहीं रहतीं। हक्कीकत की सुबह देर-सवेर ज़रूर होगी। ज़िंदगी का क़ाफ़िला एक दिन अपने मंज़िल तक पहुँच ही जाएगा। जिसे दिन और रात रंग-बिरंगे

थोड़े की तरह उठाए लिए जा रहे हों, उसे याद रखना चाहिए कि चाहे उसे लगे कि वह एक जगह ठहरा है, हकीकत में वह आगे बढ़ रहा है—अपनी मंजिल की तरफ। हर दिन उसे मौत की तरफ एक क़दम और आगे ले जा रहा है।

जान ले, मेरे बेटे, कि तेरी हर ख्वाहिश पूरी नहीं हो सकती, और तू मौत से बच निकलने की उम्मीद नहीं कर सकता। तू भी अपनी ज़िंदगी के दिन वैसे ही गुज़ार रहा है जैसे तुझसे पहले लोगों ने गुज़ारे। इसलिए अपनी उम्मीदों, ख्वाहिशों और लालसाओं को क़ाबू में रख। अपनी माँगों में एतिदाल रख। बिल्कुल ईमानदार तरीकों से रोज़ी कमा।

जो कुछ तुझे हलाल और इज़ज़त के साथ मिले, उसी पर क़नाअत कर। सब्र रख और अपनी ख्वाहिशों को तुझे पागल न बनाने दे, क्योंकि बहुत सी ख्वाहिशें ऐसी होती हैं जो मायूसी और नुक़सान की तरफ ले जाती हैं। याद रख कि हर माँगने वाला या हर दुआ करने वाला हमेशा वही नहीं पाता जो वह माँगता है, और जो अपनी ख्वाहिशों पर क़ाबू रखता है, अपनी खुदारी बनाए रखता है, वह हमेशा बदक़िस्मत भी नहीं रहता।

इसलिए अपनी खुदारी को गिरवी न रख, घटिया और दब्बू न बन, और इन नीच आदतों के ज़रिए खुद को मत झुका—भले ही ये आदतें तुझे दिल की मुराद दिलाने वाली क्यों न लगें। इस दुनिया में कोई चीज़ खुदारी, शराफ़त और इज़ज़त के नुक़सान की भरपाई नहीं कर सकती।

होशियार रह, मेरे बेटे! ख़बरदार कि तू खुद को किसी का गुलाम न बना ले। अल्लाह ने तुझे आज़ाद पैदा किया है। अपनी आज़ादी को किसी भी चीज़ के बदले मत बेच। इज़ज़त और खुदारी बेचकर जो फ़ायदा मिलता है, उसमें कोई असली क़ीमत नहीं—जैसे ग़लत तरीकों से कमाई गई दौलत और ताक़त में कोई सच्ची भलाई नहीं।

सावधान रह, मेरे बेटे, कहीं लालच और हिर्स्त तुझे तबाही और हलाकत की तरफ न ले जाए। अगर तू इस बात में कामयाब हो सके कि अल्लाह के सिवा कोई तेरा सहारा न हो, तो पूरी कोशिश कर कि यह शराफ़त हासिल कर ले—क्योंकि वह तुझे तेरा हिस्सा देगा, चाहे तू अपने देने वालों को खुश करे या नहीं। याद रख कि अल्लाह की तरफ से तुझे जो थोड़ा-सा भी मिलता है, वह इंसानों की तरफ से मिलने वाली बहुतायत से ज़्यादा फ़ायदेमंद, ज़्यादा इज़ज़त वाला और ज़्यादा टिकाऊ होता है। और इंसान तुझे क्या दे सकता है सिवा उसके, जो अल्लाह ने उसे दिया है?

तेरी खामोशी से होने वाले नुक्सान की भरपाई आसानी से हो सकती है, लेकिन ज्यादा और बे-लगाम बोलने से होने वाला नुक्सान पूरा करना मुश्किल होता है। क्या तू नहीं देखता कि पानी को महफूज़ रखने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि उसके मुँह को बंद रखा जाए?

जो कुछ तेरे पास है, उसकी हिफाज़त करना दूसरों से माँगने से बेहतर है।

नाकामी और ग़रीबी की तल्खी, भीख माँगने की रुसवाई से कहीं ज्यादा मीठी है।

किसी हुनर या पेशे की इज़ज़तदार मेहनत से मिलने वाली थोड़ी कमाई भी गुनाह और बुराई से जमा की गई दौलत से बेहतर है।

तेरे राज़ की हिफाज़त तुझसे बेहतर कोई नहीं कर सकता।

अक्सर इंसान जिस चीज़ को पाने की सबसे ज्यादा कोशिश करता है, वही उसके लिए सबसे ज्यादा नुक्सानदेह होती है।

जो बहुत ज्यादा बोलता है, वह सबसे ज्यादा ग़लतियाँ करता है।

जो बार-बार सोचता है, उसकी दूर-अंदेशी बढ़ती है।

अच्छे लोगों की संगत से तेरा किरदार निखरेगा, और बुरे लोगों की संगत से बचने से तू बुराई से बचेगा। ग़लत तरीकों से कमाई गई रोज़ी सबसे बदतर रोज़ी है।

कमज़ोर और बेबस पर जुल्म करना सबसे बदतर दर्रिंदगी है।

अगर तेरी नरमी से जुल्म पैदा होता है, तो सख्ती ही असली रहम है।

कई बार दवा बीमारी बन जाती है, और कभी-कभी बीमारी ही सहत की हिफाज़त करती है।

अक्सर तुझे ऐसे लोगों से नसीहत मिलती है जो नसीहत के क़ाबिल नहीं होते, और कई बार ऐसे सलाहकार मिलते हैं जो सच्चे नहीं होते।

खोखली उम्मीदों पर भरोसा न कर, क्योंकि खोखली उम्मीदें बेवकूफ़ों की पूँजी होती हैं।

हिक्मत का मतलब है तजुर्बों को याद रखना और उनसे फ़ायदा उठाना। सबसे अच्छा तजुर्बा वही है जो सबसे अच्छी चेतावनी और नसीहत दे।

मौकों से फ़ायदा उठा, इससे पहले कि वे तुझसे मुँह मोड़ लें।

हर कोशिश करने वाला कामयाब नहीं होता।

जो इस दुनिया से चला गया, वह वापस नहीं आता।

सबसे बड़ी बेवकूफ़ी यह है कि इंसान इस ज़िंदगी के मौके भी गँवा दे और आखिरत की कामयाबी भी खो दे।

हर अमल का एक नतीजा होता है।

जल्द ही तुझे वही मिलेगा जो तेरे नसीब में लिखा है।

हर कारोबार में कुछ न कुछ खतरा और नुकसान का डर होता है।

अक्सर थोड़े मुनाफ़े भी बड़े फ़ायदों जितने काम के साबित होते हैं।

जो तेरा अपमान करे, उसका साथ देने वाला, और वह दोस्त जो तेरे बारे में अच्छी राय न रखता हो—ये दोनों तेरे किसी काम के नहीं।

जिन पर तुझे ताक्त और इखियार हासिल हो, उनके साथ इज़ज़त और मेहरबानी से पेश आ।

गैर-अक्लमंद, बे-वजह और फ़िज़ूल उम्मीदों के ज़रिए खुद को खतरे में डालने का जोखिम मत उठाना।

इस बात का खास ख्याल रखना कि तारीफ़ और चापलूसी के धोखे में न आ जाओ।

जब तेरा भाई तुझे नुकसान पहुँचाने पर आमादा हो, तब भी उसके साथ भलाई करना। जब वह रिश्तेदारी को न माने या अनदेखा करे, तब भी उससे दोस्ती बनाए रखना, उसकी मदद करना और रिश्ता क्रायम रखने की कोशिश करना। अगर वह तुझसे कंजूसी करे और मदद से इंकार करे, तब भी तू उसके साथ दरियादिली करना और उसे माली सहारा देना। अगर वह तुझ पर सख्ती करे, तो तू उसके साथ नरमी और समझदारी से पेश आना। अगर वह तुझे तकलीफ़ पहुँचाए, तो उसके बहानों को क्रबूल कर लेना। उसके साथ ऐसा बर्ताव करना जैसे वह मालिक हो और तू गुलाम, वह एहसान करने वाला हो और तू एहसान पाने वाला। लेकिन सावधान रहना कि यह रवैया नाक़ाबिल और घटिया लोगों के साथ न अपनाओ।

अपने दोस्त के दुश्मन से दोस्ती मत करना, वरना तेरा दोस्त ही तेरा दुश्मन बन जाएगा।

अपने दोस्त को सच्चे दिल से और अपनी पूरी क़ाबिलियत के साथ नसीहत देना, चाहे वह नसीहत उसे पसंद न आए।

अपने गुस्से और तैश पर पूरा क्राबू रखना, क्योंकि मैंने आखिर में इससे ज्यादा फ़ायदेमंद और अच्छे नतीजे देने वाली कोई चीज़ नहीं देखी।

जो तुझसे सख्त, बद-तमीज़ और कठोर हो, उसके साथ नरमी, खुशनुमाई और सहनशीलता से पेश आना; धीरे-धीरे वह भी तेरे रवैये की तरफ़ झुक जाएगा।

अपने दुश्मन पर भी एहसान करना और उसके साथ लिहाज़ से पेश आना, क्योंकि इससे तुझे दो में से एक जीत ज़रूर मिलेगी: या तो तू अपने दुश्मन से ऊँचा उठ जाएगा, या उसकी दुश्मनी की शिद्दत कम हो जाएगी।

अगर तू अपने दोस्त से रिश्ता तोड़ना चाहे, तो उसे पूरी तरह न तोड़ना। अपने दिल में उसके लिए थोड़ी क़द्र बाक़ी रखना, ताकि अगर वह लौट आए तो तेरे दिल में उसके लिए जगह हो।

उस इंसान को मायूस मत करना जो तेरे बारे में अच्छी राय रखता हो, और उसकी राय बदलने का सबब न बनना।

इस ग़लतफ़हमी में कि दोस्त होने के नाते तू जैसा चाहे वैसा बर्ताव कर सकता है, अपने दोस्त के हक्क न मारना; क्योंकि जब उससे उसके हक्क और इछित्यार छीन लिए जाते हैं, तो वह दोस्त नहीं रहता।

अपने घरवालों के साथ बद-सुलूकी मत करना और उनके साथ ऐसा बर्ताव मत करना जैसे तू दुनिया का सबसे ज़ालिम इंसान हो।

जो तुझसे दूर भागता हो, उसके पीछे मत दौड़ना।

तेरे किरदार की सबसे बड़ी कामयाबी यह है कि तेरे भाई की दुश्मनी, तेरे दिल की मोहब्बत और दोस्ती पर ग़ालिब न आए, और उसकी बद-सुलूकी, तेरी नेकी पर भारी न पड़े।

ज़ुल्म और ज्यादती पर परेशान और मायूस मत होना, क्योंकि जो तुझ पर ज़ुल्म करता है, वह असल में खुद अपना नुक़सान कर रहा होता है और तेरे भले के रास्ते खोल रहा होता है।

जिसने तेरे साथ भलाई की हो, उसके साथ कभी बद-सुलूकी मत करना।

अच्छी तरह जान ले, मेरे बेटे, कि रोज़ी दो तरह की होती है: एक वह जिसे तू तलाश करता है, और दूसरी वह जो खुद तेरा पीछा करती है (जो तेरे नसीब में लिखी है)। वह तुझे मिलकर रहेगी, चाहे तू उसे पाने की कोशिश करे या न करे।

ज़रूरत, बेबसी और ग़रीबी में दब्बू, गिडगिडाने वाला और भीख माँगने वाला बनना, और ताक्त व दौलत मिलने पर घमंडी, ज़ालिम और सख्त हो जाना—ये दोनों इंसानी किरदार की बहुत बुरी खूबियाँ हैं।

इस दुनिया की कोई चीज़ तेरे लिए सच में फ़ायदेमंद नहीं, जब तक कि उसमें तेरी आखिरत का कोई फ़ायदा और क़ीमत न हो। अगर तू इस दुनिया में खोई हुई चीज़ों पर अफ़सोस करना ही चाहता है, तो उन चीज़ों के खोने पर अफ़सोस कर जिनकी क़ीमत हमेशा की थी।

माझी और जो कुछ माझी में तेरे पास था, वह अब तेरे पास नहीं है। इससे तू अक़लमंदी से यह नतीजा निकाल सकता है कि जो कुछ आज तेरे पास है, वह भी एक दिन तुझसे चला जाएगा।

उन लोगों जैसा मत बनना जिन पर नसीहत का कोई असर नहीं होता और जिन्हें सुधारने के लिए सज्जा की ज़रूरत पड़ती है। अक़लमंद इंसान नसीहत से तालीम और तहज़ीब हासिल करता है, जबकि जानवर और दरिंदे सज्जा से ही सुधरते हैं।

अपने ग़म, फ़िक्र और मुसीबतों पर सब्र, रहम करने वाले रब पर यक़ीन और अपनी मेहनत के ज़रिए क़ाबू पाना। जो सीधा रास्ता, ईमानदार और अक़लमंद सोच व अमल छोड़ देता है, वह खुद अपना ही नुक़सान करता है।

दोस्त रिश्तेदार की तरह होता है, और सच्चा दोस्त वह है जो तेरी पीठ पीछे भी तेरी भलाई बयान करे।

बे-हृद ख़्वाहिशें मुसीबतों से जुड़ी होती हैं।

अक्सर क़रीबी रिश्तेदार अजनबियों से ज़्यादा दूर हो जाते हैं, और कई बार अजनबी अपने क़रीबी रिश्तेदारों से ज़्यादा मददगार साबित होते हैं।

वह इंसान ग़रीब है जिसके पास दोस्त नहीं।

जो सच को छोड़ देता है, उसकी ज़िंदगी का रास्ता तंग और मुश्किल हो जाता है।

क़नाअत और ईमानदारी इंसान की इज़ज़त और मकाम को बचाए रखने की हमेशा रहने वाली पूँजी हैं।

सबसे मज़बूत रिश्ता इंसान और अल्लाह के बीच का रिश्ता है।

जो तेरा ख़याल न रखे, वही तेरा दुश्मन है।

अगर किसी चीज़ को हासिल करने में जान या तबाही का ख़तरा हो, तो उससे बचने में ही सलामती है।

कमज़ोरियों और ऐबों की चर्चा नहीं करनी चाहिए।

मौके बार-बार नहीं आते।

कभी-कभी बहुत अक्लमंद और पढ़े-लिखे लोग भी अपने मक्कसद में नाकाम रहते हैं, और कभी जाहिल और अनपढ़ लोग अपने मक्कसद हासिल कर लेते हैं।

बुरे कामों को जितना हो सके टालते रहो, क्योंकि उन्हें जब चाहो तब कर सकते हो—फिर जल्दी क्या है?

जाहिल लोगों से रिश्ता तोड़ लेना, अक्लमंद लोगों से रिश्ता जोड़ने जैसा है।

जो इस दुनिया पर भरोसा करता है, दुनिया उसे धोखा देती है, और जो इसे बहुत अहमियत देता है, यह उसे रुस्वा कर देती है।

तेरा हर तीर निशाने पर नहीं लगता।

जब हैसियत बदलती है, तो हालात भी बदल जाते हैं।

किसी रास्ते की हालत जानने से पहले यह देख लो कि सफ़र में तेरे साथ चलने वाले लोग कैसे हैं।

जिस घर में तू रहने जा रहा है, उसकी हालत पूछने से पहले यह जानने की कोशिश कर कि तेरे पड़ोसी कैसे हैं।

बातचीत में बेहूदा और हास्यास्पद बातें शामिल मत करना, चाहे तुझे दूसरों की बात ही क्यों न दोहरानी पड़े।

औरतों से मशविरा मत माँगना; उनके फैसले अक्सर कच्चे और ग़लत होते हैं और उनके इरादे मज़बूत नहीं होते।

उनकी हिफ़ाज़त करना, उनकी निगहबानी करना और उन्हें बुरे माहौल और बदनाम नज़ारों से बचाने के लिए साया बनना। यह निगहबानी उन्हें हर नुक़सान से मह़फ़ूज़ रखेगी। गुनाह और बुराई भरे माहौल से उनका वास्ता—चाहे तू कितनी ही हिफ़ाज़त क्यों न कर ले—बिना निगहबानी के रहने से भी ज्यादा नुक़सानदेह साबित होता है। उन्हें ऐसे कामों में दख़ल न देने देना जहाँ तू खुद उनकी रहनुमाई या हिफ़ाज़त न कर सके। उन्हें ऐसी चीज़ों की तमन्ना न करने देना जो उनकी क़ाबिलियत से बाहर हों।

वे इंसानियत की ज़ीनत हैं, हुक्मत और हुक्मरानी के लिए पैदा नहीं की गईं। उनकी चाहतों में मुनासिब दिलचस्पी लेना और उन्हें अहमियत देना, लेकिन अपनी राय पर उन्हें ग़ालिब न आने देना और अपनी सही सोच के खिलाफ़ चलने पर मज़बूर न होने देना।

उन्हें ऐसी शादियों पर मजबूर न करना जिनसे वे नफरत करती हों या जिन्हें वे अपनी शान के खिलाफ समझती हों, क्योंकि इससे इज़ज़तदार और पाक-दामन औरतें बदनामी और बेहयाई की तरफ जा सकती हैं।

अपने नौकरों में काम बाँट दो, ताकि हर एक से उसके सौंपे गए काम का हिसाब लिया जा सके। यह तरीका उस हालत से बेहतर और आसान है जिसमें हर काम की ज़िम्मेदारी एक-दूसरे पर डाल दी जाए। अपने घरवालों के साथ मोहब्बत और इज़ज़त से पेश आना, क्योंकि वे तेरे लिए उन परों की तरह हैं जिनसे तू उड़ता है, और उन हाथों की तरह हैं जो तुझे सहारा देते हैं और तेरे लिए लड़ते हैं। मुसीबत और ज़रूरत में तू उन्हीं की तरफ लौटता है।

मेरे प्यारे बेटे! तुझे ये सारी नसीहतें देने के बाद मैं तुझे अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। वही इस दुनिया और आखिरत में तेरी मदद करेगा, तेरी रहनुमाई करेगा और तेरी हिफाज़त करेगा। मैं उससे दुआ करता हूँ कि वह दोनों जहानों में तुझे अपनी पनाह में रखे।

HindiDuas.ORG